समाजशास्त्र की प्रकृति
(Nature of Sociology)

समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि समाजशास्त्र की प्रकृति विज्ञान की है या नहीं। इस संदर्भ में अनेक वैज्ञानिकों के मतों के आधार पर तीन तरह के मत बनते हैं — ① समाजशास्त्र विज्ञान है, ② समाजशास्त्र विज्ञान नहीं है और ③ समाजशास्त्र की वास्तविक प्रकृति। इसकी व्याख्या के लिए विज्ञान की अवधारणा को समझना आवश्यक है —

विज्ञान के साथ अनेक भ्रामक धारणाएँ जुड़ी हुई हैं। विज्ञान का संबंध प्रयोगशाला है, इसका संबंध गणित के सूत्रों से जोड़ा जाता है तथा विज्ञान का संबंध तीक्ष्ण बुद्धिवाले से माना जाता है, विज्ञान का संबंध प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिकी से है। गुडे तथा हॉट ने लिखा है कि "विज्ञान को प्रचलित रूप से व्यवस्थित ज्ञान के संचय के रूप में परिभाषित किया जाता है।"

एल. एल. बर्नार्ड ने लिखा है "विज्ञान की परिभाषा उसमें होने वाली 6 प्रमुख प्रक्रियाओं के रूप में की जा सकती है। ये हैं - परीक्षण, सत्यापन, परिभाषा, वर्गीकरण, संगठन एवं परिमार्जन। इसमें पूर्वानुमान तथा प्रतिक्रिया व्यवहारिक क्रियाएँ भी सम्मिलित की जाती हैं।"

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विज्ञान एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत तथ्यों का संकलन, सत्यापन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है। इसका मूल उद्देश्य सामान्य नियमों की खोज कर विषय-वस्तु को जानना है जिसे नियंत्रित रूप से पूर्वानुमान के लिए प्रयुक्त किया जा सके। इस प्रकार विज्ञान वैज्ञानिक पद्धति द्वारा संकलित ज्ञान है।

इसकी 6 निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

1. विज्ञान वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है।
2. विज्ञान अवलोकन की पद्धति के माध्यम से तथ्यों का संग्रह, विश्लेषण और वर्गीकरण करता है।
3. विज्ञान क्या है, का वर्णन करता है।
4. विज्ञान कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या करता है।

5. विज्ञान सिद्धांतों की परीक्षा व पुनर्परीक्षा करता है।
6. विज्ञान में भविष्यवाणी करने की क्षमता है।

समाजशास्त्र विज्ञान है (Sociology is Science)

समाजशास्त्र की प्रकृति के बारे में एक विचारधारा यह है कि यह विज्ञान है और विज्ञान होने के लिए जिन विशेषताओं की आवश्यकता है वे सभी इसमें मौजूद है। इनको इस प्रकार समझा जा सकता है —

(i) वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग :- समाजशास्त्र मानव समाज एवं इससे संबंधित सभी सामान्य घटनाओं एवं सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करता है। इस अध्ययन में समाज शास्त्र अनेक वैज्ञानिक पद्धतियों को विकसित किया है। इन वैज्ञानिक पद्धतियों में अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची, सामाजिक सर्वेक्षण, समाजमिति, व्यक्तिगत जीवन अध्ययन पद्धति, सांख्यकीय पद्धति आदि आते है। इसके माध्यम से सही जानकारी प्राप्त होती है।

(ii) अवलोकन का उपयोग :— समाजशास्त्र अवलोकन द्वारा तथ्यों को संकलित करता है, फिर उसका वर्गीकरण एवं विश्लेषण करता है। समाजशास्त्री दूसरे के कहने या सुनने पर विश्वास नहीं करता है। कल्पना का कोई स्थान नहीं होता है।

(iii) क्या है, का वर्णन :— समाजशास्त्र में घटनाओं या तथ्यों को उसी रूप में रखा जाता है जिस रूप में होती है यानी वास्तविक तथ्यों अध्ययन है। उचित या अनुचित की व्याख्या से यह दूर रहता है। जो है उसी का वर्णन किया जाता है, क्या होना चाहिए इसका नहीं।

(iv) कार्य-कारण संबंध :- समाजशास्त्र कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या प्रस्तुत करता है जो कि विज्ञान का आधार है। समाजशास्त्र वास्तविक घटनाओं व समस्याओं का अध्ययन कर वर्गीकरण एवं विश्लेषण तो करता ही है साथ ही घटनाओं के कारणों की भी व्याख्या करता है। जैसे- कार्ल मार्क्स का वर्ग-संघर्ष का सिद्धान्त।

(v) परीक्षा और पुनर्परीक्षा :- समाजशास्त्र के नियमों की परीक्षा व पुनर्परीक्षा की जा सकती है। इस शास्त्र में

वैज्ञानिक पद्धति के सहारे तथ्यों को संकलित कर वर्गीकरण एवं विश्लेषण होता है। अतः इसकी प्रमाणिकता की जाँच की जा सकती है।

(vi) भविष्यवाणी :— समाजशास्त्र में भविष्यवाणी करने की क्षमता है, जोकि विज्ञान की कसौटी है। समाजशास्त्र वर्तमान परिस्थिति के आधार पर भविष्यवाणी करता है। परिवार में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर या जाति में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर भविष्य में परिवार या जाति का रूप क्या होगा इसका भविष्यवाणी समाजशास्त्र करता है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र की प्रकृति विज्ञान की है क्योंकि इसमें विज्ञान के आवश्यक तत्व मौजूद है।

समाजशास्त्र विज्ञान नहीं है (Sociology is not Science)

समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति पर आपत्ति उठाने वाले हैं। इस वर्ग के विद्वानों का मानना है कि समाजशास्त्र यथार्थ विज्ञान नहीं हो सकता, क्योंकि विज्ञान के रूप में इसकी अपनी कुछ सीमाएं हैं। समाजशास्त्र विज्ञान नहीं है। इस संदर्भ में जो तर्क प्रस्तुत किये गये हैं, उसका विवेचन निम्न प्रकार से है—

(i) वैषयिकता का अभाव (Lack of Objectivity)
(ii) मापने में असमर्थ (Incapable in Measuring)
(iii) प्रयोगशाला का अभाव (Lack of Laboratory)
(iv) भविष्यवाणी नहीं कर पाना (Unpredictability)
(v) सार्वभौमिकता का अभाव (Lack of Universality)